Systematic Vs Regional Geography.   Vishal

क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल।

भौगोलिक ज्ञान प्राप्ति के दो तरीके होते हैं।
(1). प्रादेशिक भूगोल,
(2). क्रमबद्ध भूगोल।

(1) – प्रादेशिक भूगोल भौगोलिक ज्ञान का क्रोड़ है। 18वीं सदी के अंतिम चरण में Classical Period के बाद प्रादेशिक संकल्पना का काफी विकास हुआ। इसमें भूतल को प्रदेशों में बाँट कर प्रत्येक प्रदेश के अजैविक-जैविक तत्वों का विश्लेषण, संश्लेषण कर अन्य प्रदेशों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

रिटर के ERDKUNDE ग्रंथ में, प्रादेशिक वर्णन है। मानव भूगोलवेत्ताओं ने अधिकांशतः प्रादेशिक अध्ययन पर बल दिया। 'ब्लाश', हार्टशोर्न आदि भी इसके समर्थक थे। "Complete compromise of phenomena needs to be studied in its areal variation".
— Hartshorne

इस समय प्रादेशिक भूगोल का प्रयोग अनुसंधान और राजनीति के क्षेत्र में किया जा रहा है। प्रादेशिक भूगोल में किसी बड़े या छोटे प्रदेश में किसी भौतिक या मानवीय तत्वों का समेकित अध्ययन किया जाता है। ~~[illegible]~~

(ii) क्रमबद्ध भूगोल में पृथ्वी को एक इकाई मानकर सभी भौतिक-मानवीय तत्वों का समेकित अध्ययन किया जाता है। इसलिए इसे प्रकरणात्मक भूगोल या उद्देश्य भूगोल या Topical geography कहते हैं। क्रमबद्ध भूगोल का विकास हम्बोल्ट के समय से प्रारंभ हुआ जब खोज युग के पश्चात् नई दुनिया का ज्ञान भी प्राप्त हो गया।

हम्बोल्ट का KOSMOS ग्रंथ भी क्रमबद्ध विधि पर ही ~~बल~~ देता है।

भूतल पर व्याप्त विभिन्नताओं के बावजूद पृथ्वी एक संगठित इकाई माना जाता है।
"The most important aim of all physical science is to recognise unity and diversity — Humboldt

क्रमबद्ध भूगोल को विषय के आधार पर दो वर्गों में रखा जाता है।

(i) - भौतिक भूगोल

(ii) - मानव भूगोल

— (i) — भौतिक भूगोल → भौतिक भूगोल में स्थल मंडल, जल-मंडल, वायुमंडल तथा जीवमंडल का अध्ययन किया जाता है। जैसे — मिट्टी, चट्टान, वनस्पति इत्यादि।

— (ii) मानव भूगोल → इसमें जनसंख्या, आवास, मानव क्रियाएँ और संस्कृति का अध्ययन किया जाता है।

क्रमबद्ध भूगोल में एक विषय वस्तु का अध्ययन विभिन्न देशों में किया जाता है, जिसे पंक्तियों में दिखाया गया है।

इसके विपरित प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन को कॉलम में प्रदर्शित किया गया है जिसमें किसी देश के भौतिक और मानव के विभिन्न पहलुओं को समेकित अध्ययन किया जाता है। इस उपागम से हमें किसी प्रदेश के पूर्ण व्यक्तित्व का ज्ञान हो जाता है। इसलिए प्रादेशिक नियोजन यह अधिक लाभकारी है। यही व्यवहारिक भूगोल की आधारशिला है।

क्रमबद्ध भूगोल	प्रादेशिक भूगोल
(1) इसमें समूची पृथ्वी का अध्ययन होता है।	(1) प्रादेशिक भूगोल में पृथ्वी के बड़े या छोटे टुकड़े का अध्ययन होता है।
(2) इसमें किसी एक विषय में विशेषीकरण का अध्ययन होता है।	(2) इसमें विभिन्न विषय वस्तुओं का समेकित अध्ययन होता है।
(3) इसमें आगमनात्मक रूप से सिद्धांत का प्रतिपादन किया जाता है।	(3) इसमें सिद्धांतों का निगमनात्मक ढंगों से परीक्षण किया जाता है।
(4) इसमें विभिन्न चक्रों का पूर्ण अध्ययन होता है।	(4) इसमें प्रवाह-चक्र, जैव भू-रसायन चक्र आदि तथा किसी भी चक्रों का पूर्ण अध्ययन नहीं होता है।

दोनों में वैश्विक भूगोल के क्षेत्र में है के फलस्वरूप एक-दूसरे के महत्व को स्वीकारते हैं। क्रमबद्ध भूगोल के सामयिक रूप में भी प्रादेशिक अध्ययन को सराहा है, वैसे ही प्रादेशिक भूगोलवेत्ता हेटनर के अनुसार क्रमबद्ध भूगोल के 'सामान्य नियम' प्रादेशिक अध्ययन में सहायक है।

"The individual can not exist without the universal and vice-versa" —

V. A. Auchin

इस प्रकार क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल एक-दूसरे के पूरक है। क्योंकि प्रादेशिक भूगोल सूचनाएँ प्रदान करता है जबकि क्रमबद्ध भूगोल इन सूचनाओं को सैद्धांतिक रूप देता है इसलिए ये दोनों भौगोलिक ज्ञान प्राप्ति के दो उपागम हैं।

60:

तंत्र उपागम System Approach.

भौतिक और मानवीय भूगोल के विभिन्न तत्व आपस में अंतरसंबंधित होते हैं। इनके अंतर संबंधित जैविक और अजैविक तत्वों के बीच ऊर्जा और तत्व का प्रवाह होता रहता है। इस प्रवाह से आबद्ध संघटकों को तंत्र कहा जाता है। इस प्रकार एक तंत्र के विभिन्न उपतंत्र होते हैं और एक उपतंत्र के विभिन्न संघटक होते हैं। उदाहरण के लिए — मानव शरीर में भोजन तंत्र, नाड़ी तंत्र इत्यादि होते हैं, उसी प्रकार भूगोल में सौर्य तंत्र, पारिस्थितिकी तंत्र, जल तंत्र, समाजतंत्र, राजनैतिक तंत्र तथा आर्थिक तंत्र इत्यादि होते हैं।

i). सोलर तंत्र → हमारे सौर मंडल में नौ ग्रह हैं तथा उनके अनेक उपग्रह हैं। ये सभी ग्रह तथा उपग्रह सूर्य के चारों ओर अपनी-अपनी कक्षा में चक्कर लगाते रहते हैं। इन सभी ग्रहों पर सूर्य ऊर्जा पहुँचाती है तथा ये सभी ग्रह सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण बंधे हुए हैं।

ii). पारिस्थितिकी तंत्र → पर्यावरण के सभी तत्वों का संबंध कुछ प्रक्रमों पर निर्भर करता है। इन प्रक्रमों के वैज्ञानिक अध्ययन को पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र प्रक्रम के दो तरीके होते हैं।

(i) ऊर्जा प्रवाह → यह प्रवाह अजैविक और जैविक

रूप में एक गतिशील तंत्र है।

(ii) जैव भू रसायन चक्र → जैव भू रसायन चक्र में मिट्टी और अजैव तत्व का चक्रण होता है।

(iii) आक्सीजन तंत्र → हमारी पृथ्वी पर व्याप्त सभी वनस्पतियाँ तथा पेड़-पौधे अपना भोजन बनाने के लिए कार्बनडाई आक्साइड गैस का प्रयोग करती हैं तथा ऑक्सीजन को वायुमंडल में छोड़ती है। ये आक्सीजन मनुष्य तथा सभी जीव-जन्तु अपने श्वसन क्रिया में उपयोग में लाता है। तथा कार्बनडाई आक्साइड छोड़ता है। इस प्रकार यह चक्र वनस्पतियों तथा जीव-जन्तुओं में चलता रहता है।

(iv) जल तंत्र → हमारी पृथ्वी पर महासागरों तथा नदियों, झीलों, तालाबों आदि से जल सूर्य की ऊष्मा द्वारा वाष्पिकृत होकर वायुमंडल में चला जाता है अधिक ऊँचाई पर ये जल संघनित हो जाते हैं तथा पृथ्वी पर वर्षण के रूप में पुनः आ जाते हैं। निम्न अक्षांशों में ये वर्षा के रूप में तथा उच्च अक्षांशों में snowfall के रूप में बरस पड़ते हैं।

तंत्र के प्रकार —

(i) खुला तंत्र → इसमें बाहर से पदार्थ और ऊर्जा की आपूर्ति होती है और इसका कुछ उत्पाद होता है। उदाहरण के लिए — तालाब पारिस्थितिकी तंत्र, नगरीय पारिस्थितिकीय तंत्र।

(ii) बंद तंत्र → इसमें न तो बाहर से पदार्थ और ऊर्जा की आपूर्ति होती है और न ही यह निकलता है। उदाहरण के लिए — पूरा जीवमंडल एक पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में है।

तंत्र गतिशील होते हैं और इस गतिशीलता के दो कारण होते हैं —

(1) तत्व का प्रवाह
(2) ऊर्जा में प्रवाह या चक्र

तंत्र के ज्ञान का स्तर या उपागम —

तंत्र के ज्ञान के ~~स्तर के~~ तीन स्तर होते हैं।

(1) कालाबॉक्स उपागम → इसमें तंत्र का न्यूनतम ज्ञान होता है।

(2) भूरा बॉक्स उपागम → इसमें तंत्र के संघटक और उसके प्रक्रम की कुछ जानकारी हो जाती है।

(3) सांकेतिक उपागम — इसमें तंत्र के सभी उपतंत्र की पूर्ण जानकारी हो जाती है। साथ ही उनका प्रवाह और चक्र का प्रक्रम ज्ञात हो जाता है।
जैसे — पृथ्वी के कुछ स्थानों पर पारिस्थितिक तंत्र की जानकारी।

तंत्र में बाधा

कटास्ट्रॉफिक तंत्र → किसी भी तंत्र में मानव हस्तक्षेप से उसके संरचनात्मक या क्रियात्मक स्वरूप में बाधा आती है। जिसे कटास्ट्रॉफिक तंत्र कहा जाता है।
उदाहरण के लिए — किसी पारिस्थितिकी तंत्र में वृक्षों की कटाई से संरचनात्मक बाधा होगी जबकि जल की कमी या और भू-रसायन तंत्र की कमी से या सूर्यातप की कमी से उस तंत्र में क्रियात्मक बाधा उत्पन्न होती है। जिससे पारिस्थितिकी तंत्र क्षीण हो जाएगा।

Scanned with CamScanner